पत्नियों के लिए एक संकेत

(5:22-24)

मियामी हेरल्ड में एक असामान्य परिस्थिति की खबर छपी,जिसमें एक जवान अंग्रेज़ दज़्पज़ि ने अपने विवाह समारोह के चलते ही तलाक लेने का निर्णय कर लिया। दोनों में उस समय काफी कहा सुनी हुई, जब दुल्हन ने दूल्हे को अपनी किसी पुरानी सहेली से बात करते देख लिया और उनका वैवाहिक जीवन शुरू होने से पहले ही खत्म हो गया। मैं ऐसे लोगों को जानता हूं जिनका वैवाहिक जीवन अधिक समय तक नहीं चला, परन्तु विवाह समारोह के दौरान ही खत्म हो जाने वाले विवाह के बारे में मैंने पहली बार सुना था।

परमेश्वर की इच्छा विवाह को जीवन भर के लिए बनाने की है। यदि दो लोग उसकी योजना के अनुसार अपने आप को समर्पित कर लें तो वह उन्हें विवाह को मजबूत बनाने का ढंग बता सकता है। इफिसियों 5 अध्याय का दूसरा भाग उसकी योजना के बारे में ही है। इसमें विवाह को परमेश्वर की योजना के अनुसार बनाने के लिए कुछ मुज़्य ईंटें मिलती हैं। वास्तव में यदि पति और पत्नी पौलुस की बात को व्यवहार में लाने के लिए गंभीर हों, तो तलाक अतीत की बात हो जाए। पौलुस ने पत्नियों के नाम एक संदेश देते हुए आरज़्भ किया:

> हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। ज़्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ज़ा है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के आधीन रहें (5:22-24)।

पौलुस ने बताया कि अपने पति के प्रति पत्नी की जिज़्मेदारी उसकी अगुआई को मानना है। पत्नी को अपनी इच्छा मनवाने वाली स्वार्थी नहीं होना चाहिए। उसे दोनों के जीवन पर नियन्त्रण करने का अधिकार नहीं है। पत्नी के लिए परमेश्वर की योजना यह है कि वह स्वेच्छा से अपने पति की अगुआई को माने। ऐसा करके वाले पति-पत्नी मसीह को सज़्मान देते हैं।

परमेश्वर की योजना में पतियों को भी जिज़्मेदारियां दी गई हैं। वास्तव में पौलुस ने पत्नियों से दोगुणे संदेश पतियों के लिए दिए। यदि पति-पत्नी परमेश्वर की योजना को गंभीरता से लें तो तलाक कराने वाले वकीलों को रोजी रोटी के लिए कोई और काम ढूंढ़ना पड़ेगा। आइए परमेश्वर की योजना को निकट से देखते हैं। इस पाठ में हम पत्नियों के लिए उसकी योजना को देखेंगे। अगले पाठ में हम पतियों पर ध्यान देंगे।

अधीनता के लिए बुलावा

पौलुस ने पत्नियों के लिए स्पष्ट निर्देश जारी किए: ''हे पत्नियों अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के।'' इसमें कुछ भी छुपा हुआ नहीं है। कोई अक्षर अस्पष्ट नहीं है, सब साफ है। जिस युग में ''अपने पैरों पर खड़े होना,'' और महिलाओं की स्वतन्त्रता जैसे व्यज़्तिगत अधिकारों पर ज़ोर दिया जाता है, उसमें बहुत सी महिलाओं के लिए अधीन होने की बात ध्यान नहीं खींचती। अपनी पुस्तक *मैरिज टेज़्स मोर दैन लव* में कैरल मेहॉल ने लिखा है:

> अधीनता! मैं इस शज़्द से बहुत घृणा करती थी। मेरे दिमाग में इस शज़्द के आते ही मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं केवल हां में हां मिलाने वाली औरत हूं। मैं किसी दूसरे व्यज़्ति की परछाई बनकर नहीं रहना चाहती थी।
>
> तो भी मुझे परमेश्वर की समझदार आज्ञा मिली, ''हे पत्नियो अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के'' (इफिसियों 5:22)। मैंने परमेश्वर से और सबसे बहस की कि इस आयत का अर्थ वह नहीं हो सकता जो यह लगता था; अर्थात यह एक सांस्कृतिक कथन था जिसका अर्थ बाइबल के समय तक सही था। मेरा अगला प्रयास इस आयत को सुधारकर इस प्रकार पढ़ना होता था, ''हे पत्नियो, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के **जब वे प्रभु की तरह काम कर रहे हों।**'' पर मैं जानती थी कि इसका अर्थ यह नहीं है।
>
> अपने विवाह के पांचवें साल जब मैंने इस शज़्द को ढूंढ़ा, तो मुझे निष्कर्ष निकालना पड़ा ताकि इस आयत का अर्थ यह था कि मैं अपने आप को जैक के अधीन स्वेच्छा से ''पूरी तरह'' वैसे ही करूं जैसे यीशु मसीह के अधीन करना चाहती हूं।
>
> अभी तक मुझे विवाह फिज़्टी-फिज़्टी वाली बात लगती थी अर्थात यह कि यदि 50 प्रतिशत या आधा जैक हाथ बढ़ाए तो आधा मैं उसकी बात मानूंगी। परन्तु ऐसा लगता था कि हम यह फैसला करने के लिए कि वह आधा हाथ बढ़ाने की किसकी बारी है, पर झगड़ पड़ेंगे। मुझे अभी यह सीखना था कि बाइबल के अनुसार खुशहाल परिवार 100 प्रतिशत की बात है, जिसमें दोनों को 100 प्रतिशत झुकना आवश्यक है।[1]

परमेश्वर पत्नियों को अधीन होने के लिए कहता है। परमेश्वर चाहता है कि पत्नी अपने पति की अगुआई को माने। उसकी अगुआई को मानकर वह मसीह के प्रति भय का प्रमाण देती है। इससे वह उसकी योजना में भरोसा दिखाती है। अपने पति के अधीन न होने वाली पत्नी को प्रभु पर भरोसा रखने वाली नहीं कहा जा सकता।

यदि आप पत्नी हैं, तो ज़्या आप अपने पति के अधीन हैं? एक निरीक्षक के रूप में अपने विवाह की समीक्षा करने का प्रयास करें। इसे उस नज़र से देखें, जिससे आपके बच्चे देखते हैं। ज़्या आप दोनों में झगड़ा होता रहता है? ज़्या आपकी बातचीत में एक दूसरे पर दोषारोपण करना या शिकायत करना होता है? ज़्या आप अपने पति की प्रशंसा करती हैं? या उसका अपमान करती हैं? ज़्या आप सब कुछ अपने हाथ में लेना चाहती हैं या उसकी

अगुआई को मानना चाहती हैं ? पति की अगुआई को मानने का आपका ढंग ज़्या यीशु को स्वीकार्य है ?

अधीन होने का उद्देश्य

पत्नियों को अपने पतियों के अधीन होने के पौलुस के इस उद्देश्य पर विचार करें: ''ज़्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है'' (5:23क)। यह उद्देश्य पति के लिए परिवार का मुखिया होने के लिए परमेश्वर की योजना से जुड़ा है। पुरुष के लिए घर में परमेश्वर की इच्छा को नेतृत्व देने वाला होना है। इसका सामाजिक परज़्पराओं या संस्कृति से कुछ लेना-देना नहीं है।

''सिर'' (यू.: *kephale*) शज़्द का इस्तेमाल प्रबन्ध करने वाले के लिए किया जाता है: यह अधिकार या निर्देशन पर ज़ोर देता है। इस शज़्द में तानाशाह का कोई सुझाव नहीं है जो दूसरों से अपनी इच्छा ज़बर्दस्ती मनवाता हो। इसके विपरीत, यह ऐसे व्यज़्ति की ओर संकेत करता है जो गंभीरतापूर्वक किसी कार्य को सज़्भालता है। वह लोगों का प्रबन्ध उनकी भलाई के लिए करता है। अपने अधीन लोगों के लिए उसका निर्देशन जितना सज़्भव हो सके अच्छा होता है।

मान लीजिए कि लोकसभा एक कानून पास करती है कि घर को सज़्भालने का काम व्यज़्ति का अपना निर्णय है। इस कानून से पति की अगुआई देने की पारज़्परिक भूमिका खत्म हो जाएगी। परिवार का हर सदस्य पति और पिता के मुखिया होने से स्वतंत्र हो जाएगा। ज़्या ऐसा प्रबन्ध कारगर होगा ? ज़्या बिना नेतृत्व के कोई परिवार चल पाएगा ?

यदि आपकी नगर परिषद यह कहकर कि पुलिस को यातायात के नियमों के बारे में लोगों को जानकारी देने का कोई अधिकार नहीं है, कोई कानून पास कर दे ? मान लें कि यातायात को नियंत्रित करने का काम लोगों पर ही छोड़ दिया जाता है। कल्पना करें कि किसी ने ट्रैफिक की सभी लाइटें बुझा दीं, रुकने के सभी साइन बोर्ड हटा दिए और गति सीमा के सभी बोर्ड उतरवा दिए। ज़्या इससे कुछ काम बनेगा ? नहीं इससे तो अव्यवस्था और परेशानी बढ़ जाएगी। ज़्या आप ऐसे नगर में गाड़ी चलाना पसन्द करेंगे।

समाज, कलीसिया और घर में हर जगह अगुआई की आवश्यकता है। घर में परमेश्वर ने पतियों को अगुआई की भूमिका दी है। हे पत्नियो नीचे लिखी बातें याद रखो।

1. *अधीन होने का अर्थ नीची पदवी का होना नहीं है।* नर और मादा दोनों को परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया था। परमेश्वर के सामने दोनों समान हैं (गलतियों 3:28)।

2. *पत्नी के लिए जीवन तथा विवाह का भरपूर आनन्द लेने के लिए अधीन होना आवश्यक है।* पत्नी को जीवन का सच्चा आनन्द पूरी तरह से मसीह और उसकी इच्छा के अधीन होकर ही मिल सकता है।

3. *पत्नी के अधीन न हो पाने से पति उस स्थिति में आ जाता है जो परमेश्वर ने उसके लिए कभी नहीं चाही।* इससे वह नियन्त्रण रखने के लिए झगड़ा कर सकता है और तानाशाह बन सकता है, या वह अपने ही घर में रामू बन सकता है।

4. *अधीन होने का अर्थ आंखें मूंदकर आज्ञा मानना नहीं है।* किसी पति को यह अधिकार नहीं है कि उसकी पत्नी उसकी गालियां और ऐसे कार्यों को सहन करे ,जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हों।

5. *अधीन होने का अर्थ यह नहीं है कि पत्नी परिवार के निर्णय लेने की प्रक्रिया में या बच्चों के अनुशासन में भाग नहीं ले सकती।* अपनी पत्नी के साथ बैठकर परिवार के किसी निर्णय पर समझदारी से चर्चा करके पति से अगुआई छिन नहीं जाती। उन्हें आपस में सलाह करके निर्णय लेना चाहिए। ऐसा होने पर पत्नी अपने पति पर भरोसा रखे।

सारांश

यदि परमेश्वर की इच्छा पत्नियों द्वारा अपने पतियों की अगुआई की आवश्यकता पर ज़ोर देना होती तो मुझे नहीं लगता कि पौलुस इसकी तुलना मसीह और उसकी कलीसिया से करता। परमेश्वर हमें बताता है कि मिलकर जीवन निर्वाह करके पति और पत्नी मसीह और उसकी कलीसिया का चित्र बनाते हैं। हे पत्नियों आपको संसार को यह दिखाने का विशेषकर अपने बच्चों और नाती-पोतों को और तुझ्हारे पति के बीच के क्रम और समर्पण की तस्वीर दिखाने का अवसर मिला है, जिससे उन्हें मसीह और उसकी कलीसिया के सज़्बन्ध को समझने में सहायता मिलती है। कौन जाने कि जो कुछ वे तुम में देखते हैं, उससे वे मसीह के बनने की इच्छा करें।

पत्नियों के लिए तीन व्यावहारिक सुझाव:

पहला, प्रभु से कहें कि वह आपको दिखाए कि आप अपने पति के कितना अधीन हैं।

दूसरा, भयपूर्ण ढंग से अपने पति की अगुआई की भूमिका के अवसर ढूंढ़ें। उसमें अच्छाई निकालने के लिए जो भी कर सकती हैं, करें। उसकी सहायता करते-करते, आपको अपने अन्दर अच्छाई मिलेगी।

तीसरा, अपने पति के बारे में सकारात्मक विचार रखकर उसका सज़्मान करें।

कृपया मेरे साथ प्रार्थना करें, ''हे परमेश्वर परिवार के लिए तेरी योजना के लिए मैं धन्यवाद देती हूं। उन सब महिलाओं के लिए तेरा धन्यवाद, जिन्होंने यीशु के पीछे चलना चुनकर तुझे आदर दिया है। उनसे हमें सामर्थ मिलती है। उन पत्नियों के लिए धन्यवाद जो अपने पतियों की अगुआई को मानती हैं। उन्हें वह आनन्द दे, जो तेरे वचन को मानने से आता है। हमारे परिवारों को मजबूत बना। ऐसे पुरुष हों जो अपनी पत्नियों और बच्चों के लिए आत्मिक अगुवे तथा आशीर्ष बनें। प्रभु यीशु के लिए और उसकी कलीसिया में होने और उसके उद्धारकर्ता के रूप में प्रभु के लिए धन्यवाद। उसी के नाम से मांगते हैं, आमीन।''

टिप्पणियां

[1]कैरल मेहॉल, मैज़्स ऐंडर्स, *द गुड लाइफ: लिविंग विद मीनिंग इन ए ''नैवर-इनफ'' वर्ल्ड* (डैलस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1993), 177 में उद्धृत।